शौर्य और देश प्रेम

कवि परिचय – राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई. में प्रयाग के निहालपुर मोहल्ले में हुआ था। बचपन में ही काव्य में रुचि के कारण पन्द्रह वर्ष की आयु में इनकी प्रथम काव्य रचना प्रकाश में आई। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निर्वाह करते हुए आपको कई बार जेल यात्राएँ भी करनी पड़ी। साहित्य, परिवार और राजनीतिक जीवन की त्रिधारा से गुजरते हुए अप्रैल सन् 1948 ई. में अल्पायु में ही आपका देहावसान हो गया।

सुभद्राकुमारी चौहान मूलतः वीर रस की कवयित्री थीं। इनकी कविताओं में पारिवारिक और राष्ट्रीय जीवन के सरोकारों का सफल चित्रांकन हुआ है। सुभद्राजी की कविताएँ – 'मुकुल' और 'त्रिधारा' में संकलित हैं। कविताओं के अतिरिक्त आपने कहानियाँ और निबंध भी लिखे हैं। 'बिखरेमोती' और 'उन्मादिनी' आपकी कहानियों का संकलन हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाओं में समसामयिक देश-प्रेम, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की गहरी छाप पड़ी है। उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावनाओं को तत्कालीन राजनीतिक सन्दर्भों से जोड़कर नव-जागरण का शंखनाद किया है। देश में नव चेतना, त्याग, बलिदान का अलख जगाने में आपके काव्य की महती भूमिका रही है। आप अपनी सहज, सरल और सामान्य बोलचाल की स्वाभाविक भाषा में जटिल से जटिल भावों को बड़ी सादगी से व्यक्त करती हैं। इन कविताओं में वीर एवं वात्सल्य रस प्रधान है। गीत और लोकगीतों की गायन शैली में अपने भावों को स्वर देने में आप सिद्ध हैं। अलंकार और प्रतीकों के मोह से मुक्त अनुभूतियों का सहज प्रकाशन ही आपकी काव्यगत विशेषता है। आपकी गद्य रचनाएँ छायावादी प्रवृत्ति की निर्मल झाँकी हैं जहाँ छायावाद का वही स्वप्नलोक, वही आदर्शवाद, वही उदात्तभाव आधारभूत रूप में विद्यमान हैं।

जन-जन में देश प्रेम और स्वाभिमान की भावना जगाने वाले कवियों में आपका स्थान प्रमुख है ।

कवि परिचय – रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में सन् 1908 ई. में हुआ। हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, बँगला का भी आपको अच्छा ज्ञान था। दिनकर जी ने विभिन्न शासकीय पदों पर बड़ी योग्यता के साथ कार्य किया। द्वितीय महायुद्ध के दिनों में आपने राजकीय युद्ध प्रचार विभाग में काम करते हुए राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया। आपको सन् 1950 में मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। सन् 1972 में आपकी 'उर्वशी' रचना के लिए ज्ञान पीठ पुरस्कार मिला। 24 अप्रैल 1974 में साहित्य सेवा करते हुए राष्ट्र के इस दिनकर का अवसान हो गया।

'छायावाद के ठीक पीठ पर आए' दिनकर ने अपनी प्रवाहमयी ओजस्विनी कविता से नए युग की शुरुआत की। दिनकर सामाजिक चेतना के चारण हैं। आपकी प्रारंभिक काव्य कृतियाँ- 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'सामधेनी' और 'नीलकुसुम' हैं। इन मुक्तक काव्य संग्रहों के अतिरिक्त 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' प्रबंध रचनाएँ हैं। 'मिट्टी की ओर' 'अर्धनारीश्वर' और संस्कृति के चार अध्याय 'आपकी गद्य कृतियाँ हैं।'

दिनकर जी प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रान्ति के कवि हैं। अतीत के सुनहरे गीत लिखकर इन्होंने वर्तमान को प्रेरणा दी है। उनमें प्राचीन गौरव के प्रति अगाध प्रेम और वर्तमान के प्रति असंतोष है। भारत का मग्न-अतीत-गौरव दिनकर को सदैव कसकता रहा जिसकी वेदना रचनाओं में व्यक्त हुई है। शोषण के विरुद्ध क्रान्ति का आह्वान भी उनकी कविता में प्रमुख स्वर बना है। आपकी रचना में स्वाभाविक रूप से उपमा, रूपक, विरोधाभास, दृष्टान्त, सन्देह आदि अलंकार आ गए हैं। आपकी रचनाओं में मानवीकरण और ध्वन्यार्थ व्यंजना सशक्त और प्रभावी है। छन्द विधान भावानुकूल हैं। दिनकर प्रगतिवादी रचनाकार हैं। वह एक ऐसी सामाजिक चेतना का परिणाम हैं, जो मूलतः भारतीय है और राष्ट्रीय भावना से परिचालित है। दिनकर ओज के प्रखर गायक और राष्ट्रीयता के शिखर रचनाकार हैं।

केन्द्रीय भाव

देश प्रेम में आत्म विस्तार का भाव निहित है। जिस भाव के अन्तर्गत व्यक्ति परिवार और समाज की परिधि से भी आगे अपने देश के प्रति अपना लगाव अनुभव करने लगता है, उस भाव को देश प्रेम के अंतर्गत परिगणित किया जाता है। देश प्रेम में देश की रक्षा और देश के विकास को महत्व दिए जाने के साथ देश के प्रति पूज्य भाव का संचार भी सन्निहित होता है। जब तक व्यक्ति देश को अपना आराध्य नहीं बनाता, तब तक देश के प्रति समर्पण का भाव भी उसमें जाग्रत नहीं होता।

देश के जन जीवन और देश की सांस्कृतिक चेतना के स्वरूप से अभिभूत होते हुए इनके विकास की आधार भूमि भी देश प्रेम में सन्निहित रहती है। काव्य के अंतर्गत राष्ट्रीय भावना को देश प्रेम के साथ में ही अनुभव किया जाता है।

राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का अपना विशिष्ट स्थान है। राष्ट्र गौरव का बखान और उसकी रक्षा का प्रबल भाव जिस कविता में व्यक्त होता है, उस वीर भाव को शौर्य के अन्तर्गत गिना जाता है। शौर्य का भाव आत्म गौरव से परिपूर्ण होता है। हिन्दी कविता के सुदीर्घ इतिहास में इस भाव की प्रतिष्ठा प्रायः सभी युगों में होती रही है। आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक किसी न किसी रूप में शौर्य और देशप्रेम का भाव जाग्रत रहा है।

आधुनिक युग में सुभद्राकुमारी चौहान और रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों ने देश प्रेम से संबंधित कविताओं की रचना की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छेड़े गए आंदोलन में सुभद्राकुमारी चौहान सक्रिय रूप से सम्मिलित थीं, इसलिए उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्र के मुक्ति यज्ञ में समिधा बनने के लिए तत्पर सेनानियों के उद्‌बोधन में अनेक गीतों की रचना की है। प्रस्तुत गीत में उन्होंने राष्ट्रवीरों के परिश्रम को वासन्ती भावनाओं से जोड़ दिया है। वसन्त जो जीवन के उल्लास का प्रतीक है। युद्ध के उत्साह में भी वीरों के मन में ऐसी ही प्रसन्नता जगानी चाहिए। वसन्त का प्रकृति विधान और वसन्त की मनोदशा को कवयित्री ने युद्ध के प्रसंग से जोड़ दिया है। वे इस गीत से भारत के गौरवमय प्रतिरोधी पक्ष को भी प्रस्तुत करती हैं। उन्हें कुरुक्षेत्र, हल्दीघाटी और भूषण याद आते हैं। ये सभी शौर्य के पहचान चिह्न हैं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी कवि हैं। उनकी कविता में जागरण का संदेश है। वे हिन्दी काव्य साहित्य में अपने ओजस्वी स्वर के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं। प्रस्तुत कविता में आत्म गौरव का विस्तार किया गया है। कवि अपने उद्‌बोधन में कहते हैं कि वैराग्य और योग से बढ़कर है-कर्म का पुरुषार्थ। इस पुरुषार्थ को जगाने के लिए जरूरी है कि अन्याय के समक्ष न झुको; अपनी आन को मत त्यागो। स्मरण रखिए कि विपत्तियाँ ही व्यक्ति को संघर्षशील बनाती हैं। विनय भाव भी वीरता की छाया में सुशोभित होता है। जीवन तो गतिशीलता का ही नाम है। कवि ने स्पष्ट किया है कि स्वतंत्रता का भाव वीरता और आत्म गौरव से ही सुरक्षित रखा जाता है। कविता में ओज गुण का सर्वत्र समाहार है। तत्सम् शब्दों के विधान में कवि ने एक नया जोश भर दिया है।

वीरों का कैसा हो वसंत ?

वीरों का कैसा हो वंसत ?
आ रही हिमालय से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू,नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,
वधू-वसुधा, पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर-देश में, किन्तु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू बाजे पर उधर गान,
हैं रंग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि-अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

गलबाँहें हों या हो कृपाण,
चल-चितवन हो, या धुनष-बाण
हो रस-विलास, या दलित-त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त
वीरों का कैसा हो वसंत ?

कह दे अतीत! अब मौन त्याग,
लंके! तुझमें क्यों लगी आग ?
ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

हल्दीघाटी के शिलाखंड,
ऐ दुर्ग! सिंह-गढ़ के प्रचंड,
राणा-ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,
वीरों का कैसा हो वसंत ?

भूषण अथवा कवि चन्द नहीं,
बिजली भर दे वह छन्द नहीं
है कलम बँधी, स्वच्छन्द नहीं,
फिर हमें बतावे कौन ? हंत!
वीरों का कैसा हो वसंत ?

- सुभद्राकुमारी चौहन

(मुकुल काव्य संग्रह से)

उद्‌बोधन

वैराग्य छोड़कर बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी की सदृश जिओ रे!

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाए,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए।
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर-का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

जब कभी अहं पर नियति चोट देती है,
कुछ चीज अहं से बड़ी जन्म लेती है,
नर पर जब भी भीषण विपत्ति आती है,
वह उसे और दुर्धर्ष बना जाती है।
चोटें खाकर बिफरो, कुछ अधिक तनो रे!
धधको, स्फुलिंग में बढ़ अंगार बनो रे!

स्वर में पावक यदि नहीं; वृथा वन्दन है।
वीरता नहीं, तो सभी विनय क्रन्दन है;
सिर पर जिसके असिंघात रक्त-चन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती अभिनन्दन है।
दानवी रक्त से सभी पाप धुलते हैं!
ऊँची मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं!

जीवन गति है, वह नित अरुद्ध चलता है,
पहला प्रमाण पावक का, वह जलता है।
सिखला निरोध-निर्ज्वलन धर्म छलता है,
जीवन तरंग-गर्जन है, चंचलता है।
धधको अभंग, पाल-विपल अरुण जलो रे!
धरा रोके यदि राह, विरुद्ध चलो रे!

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. सभी दिशाएँ क्या पूछ रही हैं ?
2. किसके अंग-अंग पुलकित हो रहे हैं ?
3. वसंत के आने पर कौन तान भरने लगता है ?
4. कवि चट्टानों की छाती से क्या निकालने के लिए कह रहा है ?
5. कवि के अनुसार मनुष्य का भीतरी गुण क्या है ?
6. भ्रामरी किसका अभिनन्दन करती है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. 'ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग-जाग' से कवि का क्या आशय है ?
2. सिंहगढ़ का दुर्ग एवं हल्दी घाटी में किसकी याद छिपी है ?
3. विजयी के सदृश बनने के लिए कवि क्या-क्या करने को कह रहा है ?
4. स्वाधीन जगत में कौन जीवित रह सकता है ?
5. जीवन की परिभाषा क्या है ? कवि के विचारों को लिखिए ।
6. कवि ने वीरता के कौन से दो लक्षण बताएँ हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. कवयित्री वीरों के लिए किस तरह वसंत का आयोजन करना चाहती हैं?
2. वसंत उत्सव के लिए प्रेरक पंक्तियों का उल्लेख कीजिए।
3. कवि के अनुसार जब अहं पर चोट पड़ती है तब उसकी प्रतिक्रिया क्या होती है ?
4. स्वतंत्रता प्रेमी जाति के गुणों का वर्णन कीजिए ।
5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   (अ) गलबाँहे हो या हो कृपाण ..... कैसा हो वसंत।
   (ब) स्वर में पावक ..... मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं।

ध्यान दीजिए -

रौद्र रस - **"श्री कृष्ण के सुन वचन, अर्जुन क्रोध से जलने लगे।**
सब शोक अपना भूलकर, करतल-युगल मलने लगे,
संसार देखे अब हमारे, शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा, वे हो गए उठकर खड़े ॥"

उपर्युक्त उदाहरण में अर्जुन की क्रोधपूर्ण अवस्था का वर्णन है। पंक्तियों में रौद्र रस के निम्नलिखित अंग

स्थायी भाव – क्रोध
आश्रय – अर्जुन
आलंबन – शत्रु
अनुभाव – क्रोधपूर्ण घोषणा, शरीर काँपना
संचारीभाव – आवेग, चपलता, श्रम, उग्रता।

सहृदय के हृदय में स्थित क्रोध नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वहाँ **रौद्र रस** की निष्पत्ति होती है।

इसे भी जानिए -

''हे सारथे ! हैं द्रोण क्या, देवेन्द्र भी आकर अड़े,
है खेल क्षत्रिय बालकों का व्यूह-भेदन कर लड़े।
मैं सत्य कहता हूँ सखे ! सुकुमार मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे।''

इस उदाहरण में अभिमन्यु की वीरता का चित्रण किया गया है, जिसमें रस के विभिन्न अंग निम्नानुसार दृष्टव्य हैं –

स्थायी भाव – उत्साह
आश्रय – अभिमन्यु
आलंबन – द्रोणाचार्य आदि
अनुभाव – अभिमन्यु के वचन
संचारीभाव – रोमांच, उत्सुकता, उग्रता।

सहृदय के हृदय में स्थित उत्साह नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वह **वीर रस** का रूप ग्रहण कर लेता है।

प्रश्न 1. संकलित कविता में से 'वीर रस' की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए वीर रस को परिभाषित कीजिए।
2. रौद्र रस को समझाते हुए वीर एवं रौद्र रस में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

यह भी समझिए -

अन्योक्ति अलंकार –

''माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि ।
फूले - फूले चुन लिए, काल्हि हमारी बारि ॥''

इस उदाहरण में माली (काल का प्रतीक) फूलों को (वृद्धों का) निर्धारित समय पर तोड़ लेता है। जो आज कली (किशोरावस्था) के रूप में हैं उन्हें भी माली रूपी काल किसी दिन तोड़ लेगा।

अन्योक्ति अलंकार – जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। अर्थात् जहाँ किसी बात को सीधे या प्रत्यक्ष न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कहते हैं वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

प्रश्न – अन्योक्ति अलंकार का अन्य उदाहरण लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. सुभद्राकुमारी चौहान एवं दिनकर जी की कविताओं में से जो कविताएँ आपको प्रभावित करती हों, उनकी एक हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए ।
2. देशप्रेम से संबंधित अन्य कवियों की रचनाएँ कंठस्थ कीजिए एवं किसी राष्ट्रीय पर्व पर विद्यालय के कार्यक्रमों में सुनाइए।
3. 'आप देश के लिए क्या कर सकते हैं?' विषय पर अपने साथियों के साथ परिचर्चा कीजिए।
4. स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के चित्रों को एकत्रित कर एक एलबम तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

उदधि = समुद्र। **दिक्** = दिशाएँ। **कृपाण** = तलवार। **चंद** = चंद्रवरदाई। **प्राची** = पूर्व। **अनंग** = कामदेव। **ज्वलंत** = प्रकाशमान, जलता हुआ। **हंत** = मृत्यु, हनन

पीयूष = अमृत। **अनय** = अनीति। **अशनिघात** = वज्रघात। **स्फुलिंग** = ज्योति-कण। **अरुद्ध** = निरंतर। **तुंग** = ऊँचा। **सोम** = एक प्राचीन भारतीय लता जिसका सेवन मादक पदार्थ के रूप में किया जाता था। **व्योम** = आकाश। **दुर्धर्ष** = कठिन। **भ्रामरी** = दुर्गा। काली।